B.M.A COLLEGE , BAHERI,DARBHANGA
(A CONSTITUENT UNIT OF LNMU)
BA DEGREE-2
HISTORY (SUB./GEN.)
UNIT-5(B)
DEPARTMENT OF HISTORY
PANKAJ KR.MISHRA
DATE-19/09/2020

TOPIC- भारत छोड़ो आंदोलन(1942 ई.)

(QUIT INDIA MOVEMENT (1942 AD)

Part-1

Scanned with CamScanner

भारत छोड़ो आंदोलन (1942 ई०), भाग-1

पृष्ठभूमि

1.) 1939 ई० में दूसरे विश्वयुद्ध के आरंभ ने भारतीय राजनीति को भी प्रभावित किया। वायसराय लिनलिथगो (1936-43 ई०) ने भारतीय जनमत से सलाह मशविरा किए बगैर भारत को युद्ध में घसीट दिया और भारतीयों की ओर से जर्मनी व इटली के विरुद्ध संघर्ष में शामिल होने का ऐलान किया। भारतीय नेताओं ने इसका विरोध किया और युद्ध का समर्थन इस शर्त पर करना तय किया, जब ब्रिटिश पुख्ता संवैधानिक रियायतें प्रदान करें। लिनलिथगो के अगस्त प्रस्ताव से भारतीयों को यह रियायतें प्राप्त नहीं हुई।

2.) दिसंबर 1941 ई० में जापानियों द्वारा पर्ल हार्बर (अमेरिका) पर हमला और दक्षिण पूर्व एशिया में उनकी आसान सफलता से 1942 ई० तक युद्ध भारत के दरवाजे तक पहुँच गया। अतः युद्ध प्रयासों में भारतीय समर्थन प्राप्त करना आवश्यक हो गया। इसके लिए ब्रिटेन पर अंतर्राष्ट्रीय दबाव (अमेरिकन राष्ट्रपति रुजवेल्ट एवं चीनी नेता चियांगकाईशेक) पड़ा कि वे भारतीयों को रियायत दें। अतः चर्चिल ने क्रिप्स मिशन की स्थापना की जो मार्च 1942 ई० में भारत आया।

3.) क्रिप्स मिशन की असफलता ने भारतीयों को कटुता से भर दिया और यह स्पष्ट हो गया कि ब्रिटिश सरकार युद्ध के बीच किसी भी प्रकार के समझौते और वास्तविक संवैधानिक रियायतें देने को तैयार नहीं थी अतः अब और अधिक चुप रहने का कोई औचित्य नहीं था।

4.) साथ ही ऐसा लगने लगा था कि ब्रिटिश हार निश्चित है क्योंकि दक्षिण-पूर्व एशिया से ब्रिटिश सेना पीछे हटने लगी थी। जिस तरीके से ब्रिटिश बस्तियाँ खाली की गई उससे लोगों में अविश्वास फैला क्योंकि औरों ने तो अपनी बस्तियाँ खाली कर दी परन्तु स्थानीय लोगों को खूंखार जापानियों के विरुद्ध खुला छोड़ दिया। अब यह व्यापक डर फैला कि जापानी भारत पर हमला करेंगे। यह केवल अनुमान नहीं था क्योंकि अंग्रेजों ने तटीय बंगाल में एक कठोर "पीछे हटने की नीति" लागू करना शुरू कर दिया जिसके तहत वे नाव और संचार के साधनों को नष्ट करने लगे। इससे बंगाल की औद्योगिक प्रतिष्ठानों एवं कार्यव्यवस्था के पूरी तरह नष्ट हो जाने का खतरा उत्पन्न हो गया। इन कारणों से भारतीयों में बेचैनी व्याप्त हो गई।

5.) युद्ध के कारण बढ़ती हुई कीमतों और जरूरी वस्तुओं के अभाव से जनसाधारण बेहद असंतुष्ट था। राष्ट्रीय आंदोलन के नेताओं को शीघ्र ही इसकी जरूरत महसूस हुई क्योंकि लोगों में निराशा फैल रही थी और यह आशंका पैदा हुई कि कहीं जापानी हमले का जनता द्वारा प्रतिरोध ही न हो।

Scanned with CamScanner

(6) जुझारूपन की इस भावना को समझने में गाँधी पीछे नहीं रहे उन्होंने महसूस किया कि ब्रिटिश राज के साथ आखिरी टकराव का पल आ पहुँचा है। अतः उन्होंने लिखा कि "भारत को भगवान भरोसे छोड़ दीजिए अगर यह कुछ ज्यादा हो तो उसे अराजकता के भरोसे छोड़ दीजिए"। यह व्यवस्थित और अनुशासित अराजकता समाप्त होनी चाहिए। अगर पूरी और कानूनियत फैलती है तो मैं इसका जोखिम उठाने को तैयार हूँ। इस तरह उन्होंने ब्रितानी सरकार से भारत छोड़ देने और सत्ता को भारतीयों को सौंप देने की मांग के साथ एक आंदोलन शुरू करने का फैसला किया।

Pankaj
19/09/2020